INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 03 | January – March 2018

''पत्राचार तथा नियमित शिक्षा के माध्यम से इण्टर मीडिएट स्तर पर अध्ययनरत एवं छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन''

Sharmista Chaudhary
Assistant Professor, Department of Education.
A.R. Institute of Management, Technology-Rajpura Meerut.

Keywards: पत्राचार शिक्षा, नियमित शिक्षा, शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक आर्थिक स्तर।

ABSTRACT

वर्तमान समय में शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या दिन–प्रतिदन बढती जा रही है। लेकिन फिर भी कूछ बालक शिक्षा संस्थान में प्रवेश लेने से वंछित रह जाते हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें पत्राचार तथा दूरस्थ माध्यम से शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है। शोधकत्री ने पत्राचार तथा नियमित शिक्षा के माध्यम से इण्टर मीडिएट स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन में शोघ कार्य हेतु कुल 100 विद्यार्थियों 50 नियियमत पाठयक्रम, 50 पत्राचार पाठ्यक्रम का चयन न्यायदर्श हेतु किया, विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करने हेतु उनके परीक्षा फल तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर जानने हेतु मानकी कृत परीक्षण का प्रयोग किया। प्रदत्ता के संकलन के साख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि पत्राचार तथा नियमित शिक्षण प्रणाली में अध्ययनरत छात्रों को शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर प्राप्त हुआ, जबकि छात्रों के सामाजिक आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ।

ISSN 2454-308X
9 770024 543081

1. प्रस्तावना–

भारत एक प्रजातात्रिक विकासशील देश है। जो अन्य विकासशील देशों की तरह अपनी बढ़ती हुई जनसंख्या के लिये शिक्षा चिकित्सा, आवास आदि की व्यवस्था करना उसके लिए एक कठिन समस्या बन चूकी है। यदि समस्याओं पर शीघ्र काबू न पाया गया तो देश में भौतिक एवं शैक्षिक असमानता बढ़ जायेगी, क्योंकि उसे कम करना सहज कार्य नहीं होगा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा प्राप्त करने बालों की संख्या बढ़ी लेकिन संशोधन तथा संस्थान सीमित रहे। जिनके परिणाम स्वरूप पत्राचार एवं नियमित शिक्षा के माध्यम से ग्रहण कर रहे छात्रों के लिए शिक्षा के पाठ्यक्रम आदि समान है। केवल विद्यार्थियों के समूह व प्रकृति भिन्न है। पत्राचार शिक्षा प्रणाली उन लोगों के

लिए उपयोगी हुई, जो व्यक्तिगत कारणों के परिणामस्वरूप समय के अभाव के कारण अपनी शिक्षा को जारी नही रख सकें।

शोधकत्री द्वारा चयनित उक्त विषय पर राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर शीघ्र कार्य हुए। ''चाइल्ड ने पत्राचार शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत छात्रों के प्राप्तांक उपलब्धि परीक्षण के आधार पर नियमित छात्रों से श्रेष्ठ पाए।''

हंस मार ने पत्राचार के मूल्य और परिणामें की तुलना में नियमित परीक्षण वाले छात्रों के मूल्यों और परिणामों से पाया गया कि पत्राचार पाठ्यक्रम की लागत नियमित अध्ययन करने वाले छात्रों के मूल्यों की लागत की अपेक्षा अंश मात्र थी।

– वाल्स कैम्फर (1965) तथा लेहिकन (1967) अपने शौध पत्रों में पत्राचार शिक्षा द्वारा अभिक्रमित अनुदेशन की महत्ता पर प्रकाश डाला।

– मेमर । ने जॉन ट्रैसी क्लीनिक के द्वारा पत्राचार शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत गूगे, बहरे बच्चों के गृह परिवेश एवं शैक्षिक उपलब्धियों का परीक्षण किया।

– गुप्ता ने पत्राचार शिक्षा की उत्पादन क्षमता का अध्ययन किया। उनका अध्ययन राजस्थान विश्व विद्यालय जयपुर के पत्राचार अध्ययन संस्थान पर आधारित था।

शर्मा तथा यादव पत्राचार शिक्षा के सन्दर्भ में लागत तथा शैक्षिक उपलब्धि से सम्बोधित एक अध्ययन किया।

जय प्रकाश सिंह 1984 में मेरठ विश्व विद्याालय में स्नातक स्तर पर पत्राचार के माध्यम से अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा और अभिवृत्ति की तुलना स्नातक कक्षाओं में नियमित रूप से अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा और अभिवृत्ति में किया।

2. **अध्ययन के उद्देश्य–** शोघ अध्ययन के उद्देश इस प्रकार से निर्धारित किये गये है–

(1) इण्टरमीडिएट स्तर पर पत्राचार तथा नियमित शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

(2) इण्टरमीडिएट स्तर पर पत्राचार तथा नियमित शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत छात्रों के सामाजिक आर्थिक स्तर का तुलनात्म्क अध्ययन

3. **शोध परिकल्पना**– प्रस्तुत शोध हेतु परिकल्पना का निर्धारण इस प्रकार किया गया है–

1. इण्टरमीडिएट स्तर पर पत्राचार तथा नियमित शिक्षा प्रणाली द्वारा अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है

2. इण्टरमीडिएट स्तर पर पत्राचार तथा नियमित शिक्षा प्रणाली द्वारा अध्ययनरत छात्रों के सामाजिक आर्थिक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. **न्यादर्श–** प्रस्तुत शोध मेरठ जनपद के 100 छात्रों 50 नियमित पाठ्यक्रम से 50 पत्राचार पाठ्यक्रम से चयन सम्भव्यत्व पर आधारित यादृीच्छत न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया। जिसका विवरण सारणी 2 में प्रस्तुत है।

नियमित छात्र–50
पत्राचार छात्र–50

सारणी 1

प्रदत्र संकलन हेतु विद्यार्थियों का विवरण–

कुल संख्या	नियमित पाठ्यक्रम	पत्राचार पाठ्यक्रम	छात्रों की संख्या
1	25	–	25
2	25	–	25
3	–	25	25
4	–	25	25
योग	50	50	100

5. शोध उपकरण–

प्रस्तुत शोध हेतु निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रयुक्त उपकरण इस प्रकार है।

1. शैक्षिक उपलब्धि– शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु इण्टरमीडिएट बोर्ड की परीक्षा में नियमित एवं पत्राचार के माध्यम से अध्ययन करने वाले छात्रों के औसत को उनकी उपलब्धिके रूप में माना गया।
2. विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तरके मापन हेतु 510 कुप्पुस्वामी द्वारा निर्भित सामाजिक आर्थिक मापनी का प्रयोग शोध अध्ययन में किया गया।

6. प्रदत्त संग्रह–

प्रस्तुत शोध में प्रदत्त संकलन हेतु सर्वेक्षण की विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

7. फलांकन–

1. नियमित, पाठ्यक्रम एवं पत्राचार पाठ्यक्रम के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का आंकलन करने हेतु उनके परीक्षाफल का प्रयोग किया गया।
2. विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर के मापन हेतु प्रयुक्त मापनी में कुल 21 पद थे। और यह मापनी, अंग्रेजी में थी। यह तीन श्रेणी में अभिभावक की शिक्षा अभिभावक की व्यवसाय और छात्र के अभिभावक की आय का मापन करती है। इस मापनी के आधार पर विषयी छात्रों की तीन समूहों उच्च माध्यम और निम्न माध्यम में बाँटा गया। प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकी, विश्लेषण, मध्यमान मानक विचलन तथा (t-test) परीक्षण द्वारा दिया गया।

8. प्रदत्तों के साख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या–

प्रस्तुत शोघ में पत्राचार एवं नियमित शिक्षा प्रणाली द्वारा अध्ययरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। मध्यमानों के मध्य प्राप्त अन्तर की सार्थकता की जाच (t-test) परीक्षण द्वारा की गयी जिसे 'सारणी' 3 दर्शाया गया है।

सारणी–2

पत्राचार शिक्षा प्रणाली तथा नियमित शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन–

क्रम संख्या	छात्र संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मूल्य	सार्थकता की सार्थक स्तर
नियमित पाठ्यक्रम	50	10.34	2.08	8.85	सार्थक अन्तर
पत्राचार पाठ्यक्रम	50	10.56	2.11		

0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

1. **सारणी–3** के अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि पत्राचार तथा नियमित शिक्षा प्रणाली द्वारा अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में 0.01स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ इसका कारण यही सम्भवत है कि पाठ्यक्रम के अर्न्तगत विद्यार्थी नियमित रूप से कक्षा अध्ययन प्रणाली से जुड़े हुए है। जबकि पत्राचार पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थी कक्षा अध्ययन/अध्ययन प्रणाली से दूर रहते हैं। केवल परामर्श के आधार पर वह शिक्षक द्वारा अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करते हैं।
2. प्रस्तुत अध्ययपन का दूसरा उद्देशय इण्टर मीडिएट स्तर पर पत्राचार तथा नियमित शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत छात्रों के सामाजिक आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था।

मध्यमानों के माध्यम से प्राप्त अन्तर की सार्थकता की जॉच (t-test) परीक्षण द्वारा की गयी, जिसे सारणी 4 में दर्शाया गया है।

सारणी–3

पत्राचार तथा नियमित शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत छात्रों के सामाजिक, आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन–

अनुदेशन की विधि	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	(t) मूल्य	सार्थकता स्तर
नियमित पाठ्यक्रम	50	30.5	9.9	0.52	सार्थक अन्तर नही है।
पत्राचार पाठ्यक्रम	50	37.50	9.2		

सारणी 3 के अनुशीलन में यह स्पष्ट होता है कि पत्राचार तथा नियमित शिक्षा प्रणाली के माध्यम से अध्ययनरत छात्रों की सामाजिक तथा आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ।

सन्दर्भ गंथ सूची

1. राम, पारसनाथ — (1973) अनुसंधान परिचय लक्ष्मी नाराण अग्रवाल, आगरा।
2. प्रो0 भूषण आन्नद विभाग — पंजाब विश्व विद्यालय चन्डीगढ़, भारत का पत्राचार शिक्षा में भविष्य, पंजाब पब्लिकेशन सेन्टर, 13 ए चन्डीगढ़।
3. डॉ० सिंह एम.पी. — ''पत्राचार शिक्षा एक संस्कृत माध्यम'' तुलसी पब्लिकेशन, नई सड़क दिल्ली।
4. डॉ० वशिष्ठ के के एण्ड डॉ० शर्मा, डी एल– भारतीय शिक्षा के नई दिशाये ''राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद'' नई दिल्ली प्रकाशक इन्टर नेशनल पब्लिकेशन, हाऊस।
5. चार्ल्स ए वेडमेयर — ''वर्ल्ड टोन्डस इन करेसपान्डेन्स एजुकेशन 6 बडवर्ग मेमोरियल इस्सेज ऑन फेस–पोन्डेन्स, वाल्यूम 2 यू विस्कासिन'' प्रेस 1966।
6. विने–विनेट– — साइमन स्केल 1905
7. सिंह जयप्रकाश — 1989 कम्प्रेटिव स्टड़ी ऑफ दी एकेडेमिक एचीवमेन्ट मोटीवेशन एण्ड ढटीटपूड ऑफ एटूडेन्टस, लेवल पी.एच. डी. थोसिका एजुकेशन मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ।

Author's Detais :
Assistant Professor, Department of Education.
A.R. Institute of Management, Technology-Rajpura Meerut.